27

भारत: जनसंख्या संघटन

27.1 भूमिका

पिछले पाठ में हमने भारत में जनसंख्या वितरण, घनत्व तथा वृद्धि का अध्ययन किया है। हमने जनसंख्या के असमान वितरण तथा जनसंख्या घनत्व के कारण तथा परिणामों के विषय में भी पढ़ा। पिछले 100 वर्षों में हुई जनसंख्या वृद्धि के कारण तथा परिणामों के विषय में भी हमने विचार किया। हमने विभिन्न प्रकार के प्रवास के कारण तथा परिणामों के विषय में जानकारी प्राप्त की। इस पाठ में हम भारत की जनसंख्या के संघटन का अध्ययन कुछ निश्चित आयामों के साथ करेंगे। सबसे पहले हम उन बस्तियों की स्थिति तथा आकार का अध्ययन करेंगे, जिनमें लोग रहना पसन्द करते हैं तथा यह भी जानेंगे कि वे ऐसा क्यों करते हैं। इसके अंतर्गत जनसंख्या की ग्रामीण तथा नगरीय संरचना आती है। इसके बाद हम मालूम करेंगे कि क्या स्त्री-पुरूषों की संख्या बराबर है तथा इससे भी अधिक महत्वपूर्ण उनकी स्थिति के विषय में जानेंगे। भारतीय जनसंख्या की आयु संरचना का संगठन तथा इसकी जटिलताएं हमारी जानकारी करने का केन्द्र बिन्दु होगा। इसके पश्चात हम अपनी जनसंख्या के संगठन में विशुद्ध जनांकिकीय आयामों से सांस्कृतिक आयामों की ओर बढ़ेंगे। इससे हमें अपने समाज के भाषाई तथा धार्मिक संगठन को जानने में सहायता मिलेगी। अंत में हम संख्या, स्थिति तथा वितरण के सन्दर्भ में अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों पर निगाह डालेंगे। अंत में हमारे अध्ययन का महत्वपूर्ण केन्द्र बिन्दु अपने समाज की शैक्षिक दर तथा इसके प्रमुख सामाजिक संघटकों को जानना होगा। ये सभी विश्लेषणात्मक पहलू हमें हमारी जनसंख्या को केवल संख्या के रूप में ही नहीं, बल्कि एक मानवीय संसाधन के रूप में देखने में मदद करेंगे।

27.2 उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप:

- भारत की जनसंख्या के ग्रामीण-नगरीय, लिंग अनुपात तथा आयु संगठन का विश्लेषण कर सकेंगे।

- साक्षरता दर तथा जनसंख्या वृद्धि में सम्बन्ध स्थापित कर सकेंगें।
- भारत के रेखा मानचित्र पर जनजातीय जनसंख्या के क्षेत्रों को दिखा सकेंगे।
- निश्चित क्षेत्रों में अनुसूचित जनजातियों तथा अनुसूचित जातियों के संकेन्द्रण होने के कारणों का विश्लेषण कर सकेंगे।
- "जिन क्षेत्रों में अनुसूचित जातियों का संकेन्द्रण अधिक है, उन क्षेत्रों में अनुसूचित जनजातियाँ न के बराबर मिलती है। तथा जिन क्षेत्रों में अनुसूचित जनजातियों का अधिक संकेन्द्रण है, वहाँ अनुसूचित जातियां न के बराबर मिलती है।" इस तथ्य का विश्लेषण कर सकेंगे।
- भारत की धार्मिक एवं भाषाई जनसंख्या के संगठन की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कर सकेंगे।

27.3 ग्रामीण-नगरीय जनसंख्या संगठन

बस्तियों के आकार तथा स्थिति के आधार पर जनसंख्या को दो भागों में बाँटा जाता है – ग्रामीण तथा नगरीय। ग्रामीण जनसंख्या के अंतर्गत ऐसी छोटी-छोटी बस्तियाँ आती हैं जो देहाती क्षेत्र में छितरी हुई होती है। नगरीय जनसंख्या वह होती है जो बड़े आकार की बस्तियों जैसे नगरों तथा कस्बों में रहती है। परन्तु यह जानना महत्वपूर्ण है कि यह वर्गीकरण व्यवसायिक संरचना पर आधारित है। भारत में उन क्षेत्रों को ग्रामीण क्षेत्र के रूप में परिभाषित किया गया है, जिसकी तीन चौथाई या इससे अधिक जनसंख्या प्राथमिक व्यवसायों जैसे कृषि, पशुपालन, वानिकी, मत्स्य ग्रहण खनन आदि में लगी हो। दूसरी ओर नगरीय क्षेत्र वह है जहाँ पर तीन – चौथाई या इससे अधिक जन संख्या अकृषिगत कार्यों जैसे निर्माण उद्योग, व्यापार, यातायात, संचार, बैंकिंग, सामाजिक सेवायें जैस स्वास्थ्य, शिक्षा तथा प्रशासन में लगी हुई हो।

* ग्रामीण जनसंख्या गाँव में रहती है तथा इसके तीन-चौथाई या अधिक व्यक्ति प्राथमिक व्यवसायों में लगे हुए होते हैं।
* नगरीय जनसंख्या नगरों तथा कस्बों में रहती हैं तथा इनके तीन-चौथाई या अधिक व्यक्ति अकृषिगत व्यवसायों जैसे द्वितीयक तथा तृतीयक व्यवसायों में लगे हुए हैं।

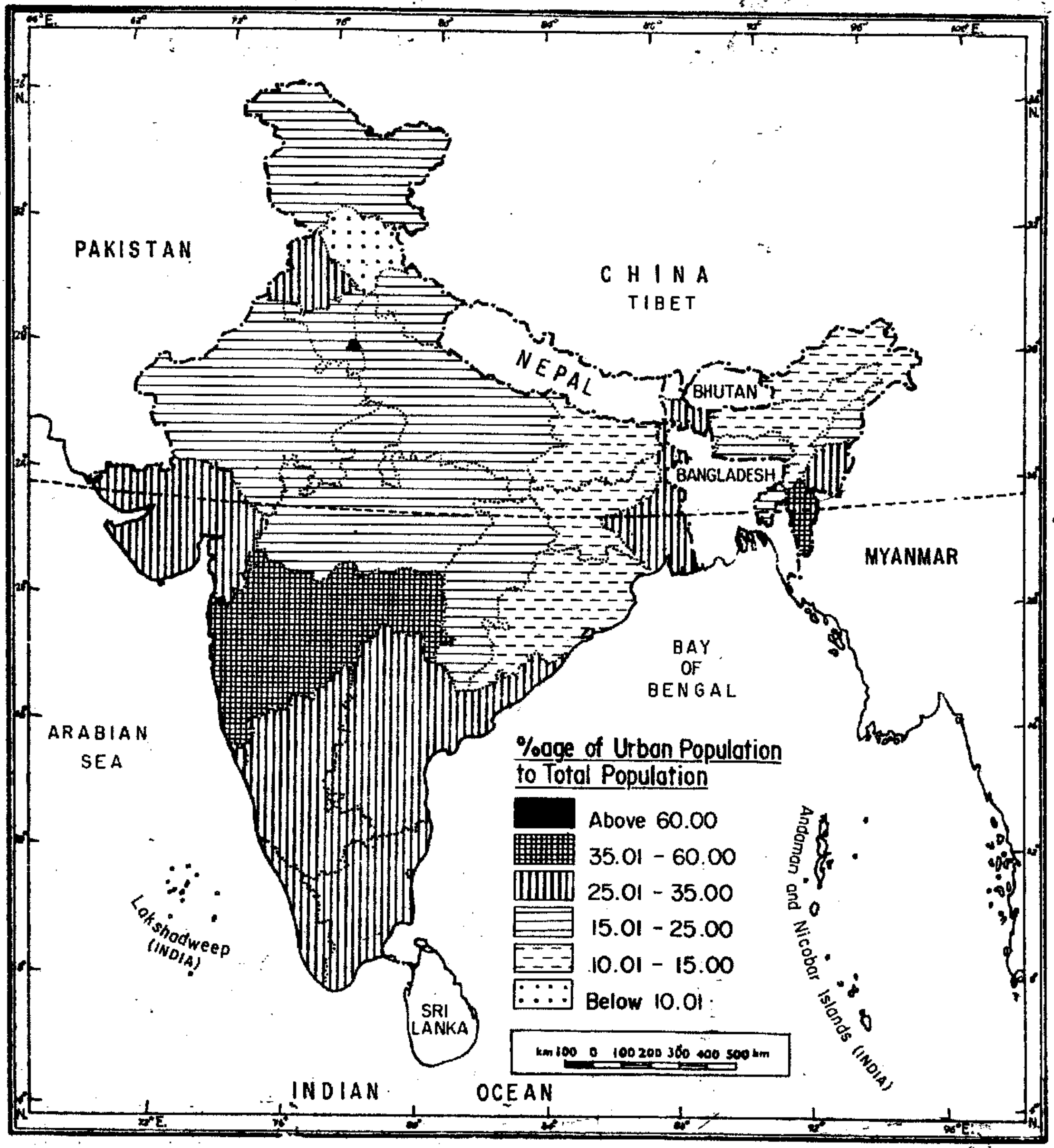

Based upon Survey of India Outline Map printed in 1987.
The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical miles measured from the appropriate base line.
The boundary of Meghalaya shown on this map is as interpreted from the North-Eastern Areas (Reorganisation) Act, 1971, but has yet to be verified.
Responsibility for correctness of internal details shown on the map rests with the publisher.

© Government of India copyright, 1987.

चित्र 27.1 भारत में नगरीय जनसंख्या का वितरण

सारिणी 27.1 भारत में ग्रामीण तथा नगरीय जनसंख्या (1901–1991)

जनगणना वर्ष	कुल जनसंख्या का प्रतिशत	
	ग्रामीण	नगरीय
1901	89.2	10.8
1911	89.7	10.3
1921	88.8	11.2
1931	88.0	12.0
1941	86.1	13.9
1951	82.7	17.3
1961	82.0	18.0
1971	80.1	19.9
1981	76.7	23.3
1991	74.3	25.7

भारत की कुल जनसंख्या 5 लाख 70 हजार गाँवों तथा 4615 नगरों में बसती है। भारत को सामान्यतया गाँवों का देश समझा जाता है। आज भी भारत की कुल जनसंख्या का 74 प्रतिशत भाग गाँवों में रहता है। परन्तु ग्रामीण जनसंख्या का अनुपात प्रति अगले दशक में घट रहा है। (देखो सारिणी 27.1) इसके परिणामस्वरूप नगरीय जनसंख्या का कुल जनसंख्या में अनुपात धीरे परन्तु लगातार बढ़ रहा है। यह अनुपात सन् 1901 में केवल 10.8 प्रतिशत था, जो 1991 में बढ़कर 25.7 प्रतिशत हो गया। प्रश्न उठता है कि ऐसा क्यों है? इसका कारण है नगरीय जनसंख्या की वृद्धि दर ग्रामीण जनसंख्या की वृद्धि दर से अधिक होना। सन् 1991 में लगभग 23.85 प्रतिशत की औसत वृद्धि दर के विपरीत, नगरीय जनसंख्या की वृद्धि दर 25 प्रतिशत हो गई है; परन्तु यह सब वृद्धि केवल जनसंख्या में प्राकृतिक वृद्धि का ही परिणाम नहीं है। वास्तव में नगरीय जनसंख्या में अधिकतर वृद्धि का कारण लोगों का ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय क्षेत्रों की ओर प्रवासन है। इससे लागों के धीरे-धीरे प्राथमिक व्यवसाय से द्वितीयक और तृतीयक व्यवसाय में परिवर्तन का आभास भी होता है। अक्सर नगर पालिका की सीमाओं अथवा नगर के निगम क्षेत्रों में आस पास के गाँव तथा उपनगर भी शामिल होते हैं।

भारत की कुल नगरीय जनसंख्या का आधा भाग केवल पाँच राज्यों में रहता है। ये पाँच राज्य हैं – महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु, पश्चिमी बंगाल तथा आंध्र प्रदेश। मध्यप्रदेश, गुजरात, कर्नाटक, बिहार तथा राजस्थान में 30 प्रतिशत से अधिक नगरीय जनसंख्या है। शेष नगरीय जनसंख्या (लगभग 20 प्रतिशत) बाकी के 15 राज्यों एवं सात संघ शाषित क्षेत्रों में रहती है।

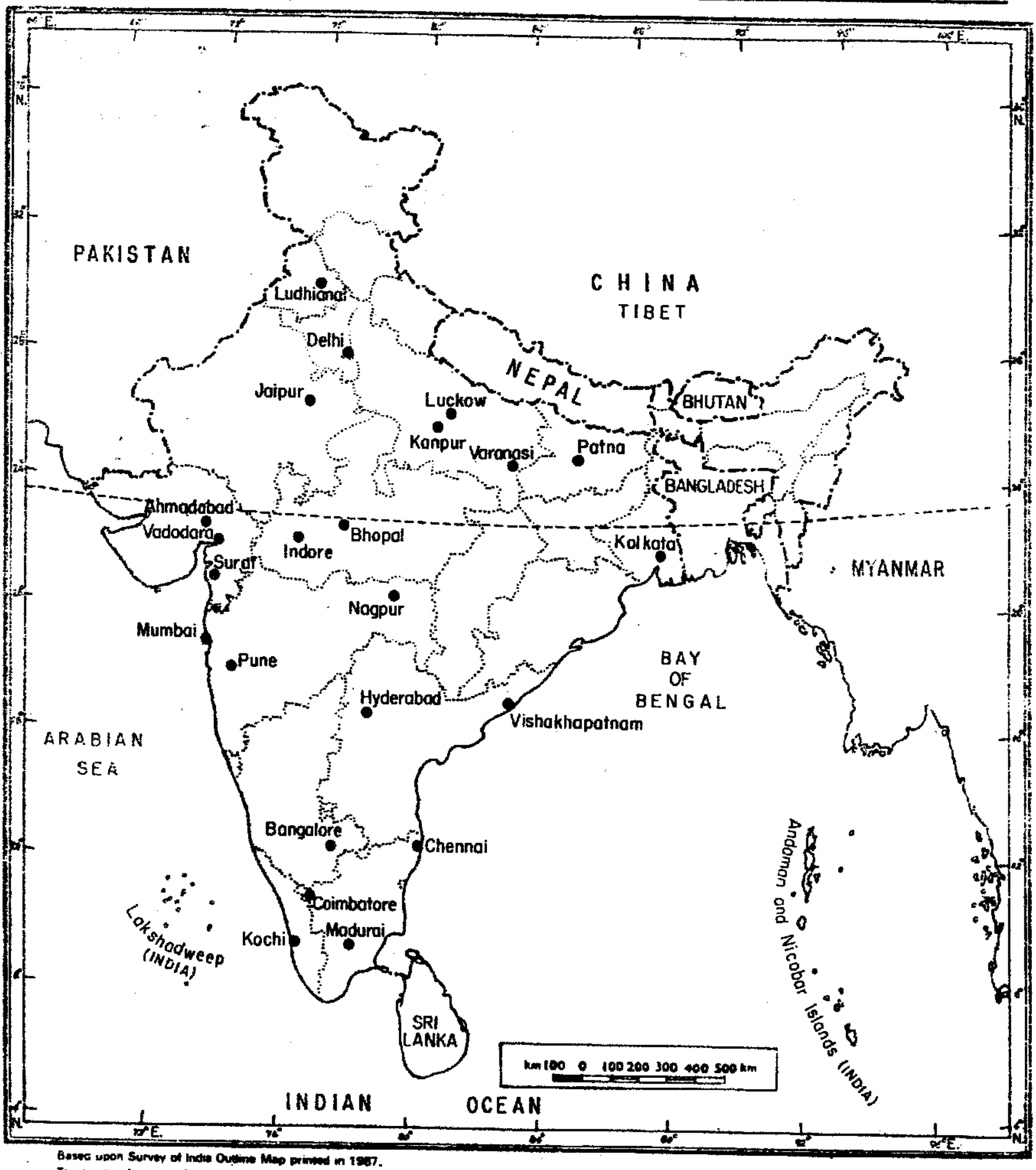

Based upon Survey of India Outline Map printed in 1987.
The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical miles measured from the appropriate base line.
The boundary of Meghalaya shown on this map is as interpreted from the North-Eastern Areas (Reorganisation) Act, 1971, but has yet to be verified.
Responsibility for correctness of internal details shown on the map rests with the publisher.

© Government of India copyright, 1987.

चित्र 27.2 भारत के महानगर

1991 की जनगणना के अनुसार 23 नगरों में प्रत्येक की जनसंख्या 10 लाख से अधिक है। 10 लाख या 10 लाख से अधिक जनसंख्या वाले नगरों को महानगर कहते हैं। ये नगर हैं – मुम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, चेन्नई, हैदराबाद, बंगलौर, अहमदाबाद, पुणे, कानपुर, लखनऊ, नागपुर, सूरत, जयपुर, कोच्चि, बड़ोदरा, इन्दौर, कोयम्बटूर, पटना, मदुरई, भोपाल, विशाखापटनम, लुधियाना तथा वाराणसी।

इन महानगरों में भारत की कुलनगरीय जनसंख्या का 65 प्रतिशत भाग रहता है। इन महानगरों की तीव्र वृद्धि अपने साथ बहुत सी समस्यायें जैसे मकान, पानी, बिजली की आपूर्ति, स्कूल, यातायात, डिस्पेंसरी, राशन की दुकान तथा कानून और व्यवस्था लाती है।

* भारत की कुल जनसंख्या का लगभग 25.7 प्रतिशत भाग नगरीय क्षेत्रों में रहता है।
* कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या का अनुपात लगातार तीव्र गति से बढ़ रहा है।
* देश में नगरीय जनसंख्या की वृद्धि दर ग्रामीण जनसंख्या की वृद्धि दर से अधिक है।
* वे नगर जिनमें प्रत्येक की जनसंख्या 10 लाख या 10 लाख से अधिक है महानगर कहलाते हैं। 1991 की जनगणना के अनुसार देश में 23 महानगर हैं।

पाठगत प्रश्न 27.1

1. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए।
(द्वितीयक तथा तृतीयक, बढ़, 23, कम, प्राथमिक)

(क) भारत में ग्रामीण जनसंख्या की वृद्धि दर नगरीय जनसंख्या की वृद्धि दर से ________ है।

(ख) ग्रामीण जनसंख्या मुख्यत: ________ व्यवसाय में लगी हुई है, जबकि नगरीय जनसंख्या मुख्य रूप से ________ व्यवसायों में लगी है।

(ग) नगरीय जनसंख्या का अनुपात सन् 1921 से ________ रहा है।

(घ) 1991 की जनगणना के अनुसार भारत में कुल ________ दस लाख या इससे अधिक जनसंख्या वाले नगर हैं।

27.4 लिंग अनुपात संगठन

लिंग अनुपात का अर्थ है किसी क्षेत्र की जनसंख्या में प्रति हजार पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या। भारत की 1991 की जनगणना के अनुसार प्रति एक हजार पुरुषों पर 927 स्त्रियाँ हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि पुरुषों की संख्या से स्त्रियों की संख्या कम है। अर्थात भारत में लिंग अनुपात प्रतिकूल है। जब स्त्रियों की संख्या पुरुषों से अधिक होती है तो लिंग अनुपात को अनुकूल कहा जाता है। केरल (1038) में लिंग अनुपात अनुकूल हैं। राज्यों में सबसे कम लिंग अनुपात अरूणाचल प्रदेश (859) में है। संघ शासित क्षेत्रों में सबसे अधिक लिंग अनुपात पांडिचेरी में है, जहाँ पर प्रति एक हजार पुरुषों पर 979 स्त्रियाँ हैं जबकि चण्डीगढ़ में सबसे कम लिंग अनुपात है, जहाँ पर प्रति एक हजार पुरूषों पर 790 स्त्रियाँ हैं। देश में लिंग अनुपात के सम्बन्ध में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह लगातार घट रहा है।

सारिणी 27.2 भारत में लिंग अनुपात (प्रति हजार पुरुषों पर स्त्रियाँ)

वर्ष	
1901	972
1911	964
1921	955
1931	950
1941	945
1951	946
1961	941
1971	930
1981	934
1991	927

जिला स्तर के प्रारूप

जिला स्तर के आंकड़ों पर एक दृष्टि डालने से पता चलता है कि पूर्वी तथा पश्चिमी राजस्थान, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, दिल्ली तथा इसके आस-पास के प्रदेशों उत्तरी पश्चिमी मध्य प्रदेश में कुछ जिलों के समूह हैं जहाँ पर लिंग अनुपात राष्ट्रीय औसत से कम है। उत्तर प्रदेश के पहाड़ी जिलों तथा हिमाचल प्रदेश के कुछ हिस्सों में दक्षिणी-पूर्वी तमिलनाडु के हिस्से, कर्नाटक, महाराष्ट्र तथा आंध्र प्रदेश में स्थिति बिल्कुल इसके

विपरीत है। यहाँ पर स्त्रियों की संख्या पुरूषों से अधिक है। केरल के सभी जिलों में लिंग अनुपात अनुकूल है अर्थात स्त्रियों के पक्ष में है।

भारत में लिंग अनुपात प्रतिकूल है। देश में औसतन प्रति एक हजार पुरूषों पर 927 स्त्रियाँ हैं। उच्चतम लिंग अनुपात केरल में हैं जहाँ पर एक हजार पुरूषों पर 1038 स्त्रियाँ है, जबकि न्यूनतम चण्डीगढ़ में है, जहाँ पर प्रति एक हजार पुरूषों पर 790 स्त्रियां हैं।

भारत में लिंग अनुपात में यह गिरावट क्यों है? भारत में घटते हुए लिंग अनुपात के प्रमुख कारण हैं- स्त्रियों में कम जीवन प्रत्याशा तथा लड़कियों में उच्च शिशु मृत्यु दर। ये दोनों ही कारण हमारे समाज में अपेक्षाकृत स्त्रियों की निम्न स्थिति से सम्बन्धित हैं। इसके अतिरिक्त, हमारी सामाजिक-धार्मिक विचार तथा मान्यताएं जैसे हमारे समाज में पुरूष को प्राथमिकता हमारे गिरते हुए लिंग अनुपात के लिए उत्तरदायी हैं। स्त्रियों की स्थिति में सुधार लाकर के तथा अच्छी चिकित्सा सुविधाओं एवं शिक्षा द्वारा स्त्रियों की शिशु मृत्यु दर के उलटने की संभावना है। विकसित एवं उन्नत चिकित्सा सुविधाओं ने शिशु मृत्यु को कम करने में काफी योगदान दिया है।

* भारत में लिंग अनुपात प्रतिकूल है। देश में 1000 पुरुषों पर औसतन 927 स्त्रियाँ हैं। सबसे अधिक लिंग अनुपात केरल में है जहाँ 1000 पुरुषों पर 1038 स्त्रियाँ हैं जबकि सबसे कम लिंग अनुपात चण्डीगढ़ में है जहाँ पर 1000 पुरुषों के पीछे स्त्रियों की संख्या 790 है।

पाठगत प्रश्न 27.2

1. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर दीजिए :-

   (क) भारत के उन राज्यों के नाम लिखिए जहाँ सबसे अधिक तथा सबसे कम लिंग अनुपात है।

   (i) ______________ (ii) ______________

   (ख) भारत की जनगणना 1991 के अनुसार भारत में लिंग अनुपात क्या है?

   ____

   (ग) लिंग अनुपात को परिभाषित कीजिए।

   ____

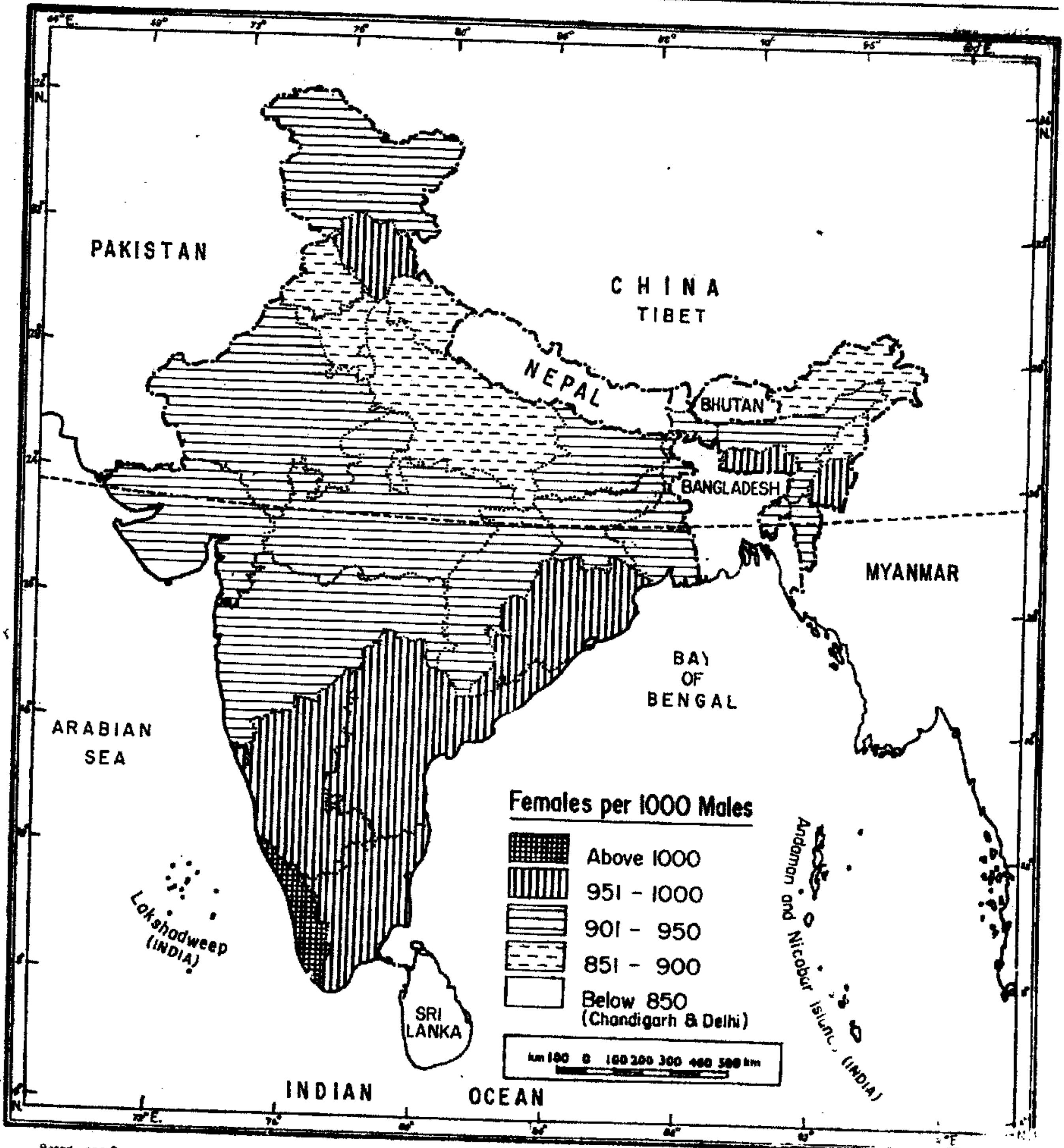

Based upon Survey of India Outline Map printed in 1987.
The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical miles measured from the appropriate base line.
The boundary of Meghalaya shown on this map is as interpreted from the North-Eastern Areas (Reorganisation) Act 1971, but has yet to be verified.
Responsibility for correctness of internal details shown on the map rests with the publisher

© Government of India copyright, 199

चित्र 27.3 भारत में लिंग अनुपात के वितरण का प्रारूप

26.5 आयु संरचना

सारिणी 27.3 भारत में आयु एवं लिंग के अनुसार कुल जनसंख्या का (प्रतिशत में) वितरण

	योग		
आयु समूह	व्यक्ति	पुरूष	स्त्री
0–4	13.1	13.2	13.0
5–9	11.8	11.9	11.8
10–14	11.1	11.2	11.0
15–19	10.5	10.9	10.2
20–24	9.8	9.7	9.9
25–29	8.1	8.1	8.1
30–34	7.0	7.0	7.1
35–39	6.0	6.0	6.1
40–44	5.0	5.0	5.0
45–49	4.4	4.4	4.5
50–54	3.7	3.7	3.7
55–59	3.1	3.1	3.1
60–69	2.3	2.2	2.4
65–70	1.8	1.7	1.9
70 +	2.1	1.9	2.3

आयु तथा लिंग पिरामिड लोगों की आयु एवं लिंग के अनुसार जनसंख्या की संरचना दिखाता है। यह जनसंख्या की वृद्धि दर तथा कार्यशील एवं आश्रित जनसंख्या का भी संकेत देता है। भारत की 1991 की जनगणना के अनुसार 14 वर्ष तक की उम्र के बच्चे कुल जनसंख्या में 36 प्रतिशत हैं। 15–59 के आयु समूह के कुल जनसंख्या में व्यक्तियों की संख्या 57.6 प्रतिशत है तथा 60 वर्ष या इससे अधिक उम्र के व्यक्तियों की संख्या 6.3 प्रतिशत है। हाल के दशकों में आयु संरचना में धीरे-धीरे कुछ परिवर्तन हो रहे हैं। विभिन्न जनसांख्यिकीय प्रवृत्तियों में से एक प्रवृत्ति यह है कि युवा जनसंख्या अर्थात 0–14 आयु समूह का अनुपात घट रहा है तथा कार्यशील आयु समूह अर्थात 15–59 आयु समूह के व्यक्तियों का प्रतिशत बढ़ रहा है। 15–59 आयु समूह के व्यक्तियों का प्रतिशत 1981 में 54 प्रतिशत से बढ़कर 1991 में 57.7 प्रतिशत हो गया। वृद्ध व्यक्तियों अर्थात 60 वर्ष या उससे अधिक उम्र के व्यक्तियों का अनुपात 1991 में 6.6 प्रतिशत

था। सबसे बड़ा अकेला आयु समूह उन बच्चों का है जिनकी आयु 14 वर्ष से कम है। यह बात चित्र 27.4 से स्पष्ट हो रही है।

आयु तथा लिंग संरचना दिखाने वाले चित्र को जनसंख्या पिरामिडं कहते हैं। इस पिरामिड का आधार चौड़ा है तथा शीर्ष पतला है।

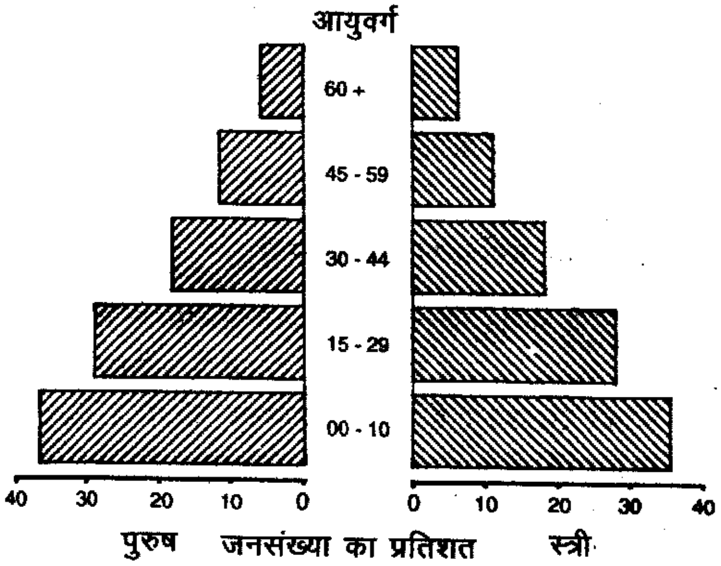

चित्र 27.4 जनसंख्या पिरामिड

27.6 भाषाई संरचना

भौतिक वातावरण की तरह ही भारत में बहुत अधिक भाषाई विविधता है। यहाँ सैकड़ों भाषाएं एवं बोलियां बोली जाती हैं, परन्तु भारत के संविधान में केवल 18 भाषाओं को मान्यता मिली है। ये भाषाएं हैं - (1) असमी, (2) बंगाली, (3) हिन्दी, (4) तेलगु, (5) तमिल, (6) मलयालम, (7) कन्नड़, (8) मराठी, (9) गुजराती, (10) उड़िया, (11) पंजाबी (12) कश्मीरी, (13) डोगरी, (14) कोंकणी, (15) सिन्धी, (16) नेपाली, (17) मनीपुरी, (18) उर्दू। भाषाओं में, विभिन्न शब्दों के अर्थ और उनके उच्चारण में अन्तर होने के कारण भी विविधता है। एक विशेष भाषा को बोलने वाले लोग ही इसे एक स्थान से दूसरे स्थान पर शब्दावली तथा उच्चारण में थोड़े अन्तर के साथ बोलते हैं। भाषा को बोलने की इन विभिन्नताओं से एक भाषा की बोलियों का उद्भव होता है। इस प्रकार एक बोली (उपभाषा) कुछ-कुछ किसी एक भाषा के सदृश्य ही होती है जिसे क्षेत्रीय भाषा माना जा सकता है। राजस्थानी, हरियाणवी, भोजपुरी अथवा पूर्वी बोलियाँ हिन्दी भाषा की ही कुछ बोलियाँ (उपभाषाएं) हैं।

भाषा संस्कृति का एक महत्वपूर्ण घटक है तथा बहुत सी भाषाएं एवं उनकी बोलियां भारत के विभिन्न भागों में बोली जाती हैं। इसके साथ ही देश में भाषाएं पूर्ण प्रादेशिक पहचान रखती हैं तथा स्वतंत्रता के पश्चात प्रमुख भाषाओं के विरतण को राज्यों के पुनर्गठन का आधार बनाया गया। संख्यात्मक सामर्थ्य के आधार पर भारत को बारह प्रमुख भाषा प्रदेशों में बांटा जा सकता है। अतः एक भाषाई प्रदेश वह क्षेत्र है जहां पर अधिकतर लोग एक आम भाषा बोलते हैं। भाषा प्रदेशों का निर्माण करने वाली भारत की मुख्य भाषाएं इस प्रकार हैं - (1) कश्मीरी, (2) पंजाबी, (3) हिन्दी/उर्दू, (4) बंगाली, (5) असमिया, (6) उड़िया, (7) गुजराती, (8) मराठी, (9) तमिल, (10) तेलगू, (11) कन्नड़, (12) मलयालम।

भारतीय भाषाओं का वर्गीकरण एवं वितरण

यद्यपि भारत की सभी भाषाएं बोलने में एक-दूसरी से असमान दिखाई देती हैं; लेकिन उनकी उत्पत्ति के आधार पर उन्हें चार भाषाई परिवारों में वर्गीकृत किया जा सकता है। चार भाषाई परिवार इस प्रकार हैं - (1) आस्ट्रिक परिवार (निषाद), (2) द्रविण परिवार (द्रविड़) (3) चीनी-तिब्बती परिवार (किरात) और (4) भारतीय-यूरोपीय परिवार (आर्य)

आस्ट्रिक परिवार की भाषाएं मेघालय, अण्डमान-नीकोबार द्वीपसमूह और मध्य भारत की जनजातीय पट्टी विशेषकर संथाल परगना, रांची और मयूरभंज जिलों में बोली जाती है। चीनी-तिब्बती परिवार की भाषाएं और उपभाषाएं देश के उत्तरी-पूर्वी क्षेत्र तथा उत्तर तथा उत्तर-पश्चिम के उपहिमालयी क्षेत्र में बोली जाती है। ये भाषाएं लद्दाख में (जम्मू और कश्मीर) हिमाचल प्रदेश के कुछ भागों एवं सिक्किम के लोगों द्वारा बोली जाती है।

द्राविड़ परिवार की भाषाएं बोलने वालों की संख्या भारत के दक्षिणी भागों में अधिक है। तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक तथा केरल ऐसे राज्य हैं जहां अधिकांश लोगों द्वारा इस परिवार की भाषाएं बोली जाती हैं। प्रायद्वीपीय पठारी प्रदेश में रहने वाले जनजातीय लोगों द्वारा भी इसी परिवार की भाषाएं बोली जाती हैं।

भारतीय-यूरोपीय परिवार की भाषाएं बोलने वाले लोग देश उत्तरी भागों तथा मध्य भागों में अधिक केन्द्रित हैं। सम्पूर्ण उत्तरी भारतीय मैदान इसी परिवार की भाषाएं बोलने वाले लोगों से बसा है। महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश में भी इन्हीं भाषाओं के बोलने वालें की संख्या अधिक है।

कुल जनसंख्या में विभिन्न भाषाई परिवारों की भाषाएं बोलने वालों का अनुपात काफी

अलग-अलग है। आर्य भाषाएं (भारतीय-यूरोपीय परिवार) बोलने वालें का अनुपात 70 प्रतिशत से अधिक है, जबकि चीनी-तिब्बती परिवार की भाषाएं केवल लगभग 0.85 प्रतिशत लोगों द्वारा ही बोली जाती हैं। द्राविड़ भाषाएं केवल 20 प्रतिशत लोगों द्वारा ही बोली जाती है।

- * भारत में बोली जाने वाली भाषाएं चार प्रमुख भाषाई परिवारों से सम्बन्धित हैं। ये परिवार हैं - (1) आस्ट्रिक परिवार, (2) द्राविड़ परिवार, (3) चीनी-तिब्बती परिवार, (4) भारतीय-यूरोपीय परिवार।
- * विभिन्न परिवारों से सम्बन्धित भाषाओं का देश के विभिन्न भागों में प्रमुख संकेन्द्रण है। आस्ट्रिक परिवार का उत्तरी-पूर्वी भाग में, द्राविड़ परिवार का दक्षिणी भाग में, चीनी-तिब्बती परिवार का उपहिमालय क्षेत्र में, तथा भारतीय-यूरोपीय परिवार का देश के उत्तरी तथा केन्द्रीय भाग में संकेन्द्रण है।
- * भारतीय आर्य परिवार की भाषाएं भारत के सबसे अधिक लोगों द्वारा बोली जाती हैं। चीनी-तिब्बती परिवार की भाषाएं बोलने वाले लागों की संख्या सबसे कम है। भारत के 70 प्रतिशत से अधिक लोग भारतीय - आर्य परिवार की भाषाएं और बोलियां बोलते हैं।

पाठगत प्रश्न 27.3

1. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से सबसे उपयुक्त शब्द द्वारा रिक्त स्थान भरिए:-

   (क) आस्ट्रिक भाषाई परिवार से सम्बन्धित भाषाओं में से एक भाषा ________ है। (संथाली / हिन्दी / बंगाली)

   (ख) हिन्दी ________ भाषाई परिवार से सम्बन्धित भाषा है। (द्राविड़ / आर्य / आस्ट्रिक)

   (ग) आस्ट्रिक भाषाएं बोलने वाले लोग मुख्यतया ________ में केन्द्रित हैं। (उत्तर-पूर्व के जनजातिय क्षेत्र / पश्चिमी हिमालय / कोंकण प्रदेशों)

27.6 धार्मिक संरचना

सारिणी 27.4 1991 में धर्म के अनुसार जनसंख्या

धार्मिक समूह	कुल जनसंख्या में प्रतिशत
हिन्दू	82.41
मुसलमान	11.67
ईसाई	2.32
सिख	1.99
बौद्ध	0.77
जैन	0.41
अन्य	0.43

भारतीय समाज विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों में बंटा हुआ है। लेकिन मौटे तौर पर सात प्रमुख धर्म हैं। अधिकांश लोग इन सात प्रमुख धर्मों में से किसी एक को मानते हैं। ये सात धर्म हैं - हिन्दू, इस्लाम, ईसाई, जैन, बौद्ध, सिख और पारसी धर्म हिन्दुओं का भारत में सबसे विस्तृत धार्मिक सम्प्रदाय है। 1991 की जनगणना के अनुसार 82.41 प्रशित लोग इस धर्म के अनुयायी हैं। इस धर्म के अनुयायी उत्तरी मैदानों और पठारी प्रदेश के उत्तरी भागों में अधिक केन्द्रित हैं। फिर भी देश के सभी भागों में उनकी संख्या पर्याप्त है। अन्य धार्मिक समुदायों का वितरण थोड़ा विच्छिन्न है और ये कुछ ही क्षेत्रों में संकेन्द्रित हैं। मुसलमानों का सबसे अधिक अनुपात जम्मू और कश्मीर, तमिलनाडु और केरल के तटीय भागों तथा लक्षद्वीप में हैं। सिखों का बाहुल्य पंजाब में है। बौद्ध अधिकतर महाराष्ट्र तथा अरूणाचल प्रदेश में तथा पारसियों का मुम्बई और इसके आस-पास बाहुल्य है। ईसाइयों की सबसे अधिक संख्या तमिलनाडु, केरल, आंध्र प्रदेश तथा उत्तरी पूर्वी भारत में है। कुल जनसंख्या में उनका सबसे अधिक अनुपात उत्तर-पूर्व में है। देश की कुल जनसंख्या में उनका प्रतिशत ऊपर दी गई सारिणी में देखो।

* सात प्रमुख धर्म हैं जिनको अधिकांश भारतीय मान्ते हैं। हिन्दुओं के सबसे बड़े समूह के बाद मुसलमानों, सिखों और ईसाईयों का स्थान है। अलग-अलग धर्मों के अनुयायियों का देश के अलग-अलग भागों में संकेन्द्रण है।

पाठगत प्रश्न 27.4

1. अधिकांश पारसी लोग भारत के किस भाग में रहते हैं?

___

2. भारत के अधिकतर ईसाई किन राज्यों में रहते हैं?

___

3. उस राज्य का नाम बताइये, जहां पर मुस्लिम जनसंख्या का सबसे अधिक संकेन्द्रण है।

___

4. अधिकांश भारतीय बौद्ध भारत के किस राज्य में निवास करते हैं?

___

27.8 अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जनजातियों का संगठन एवं वितरण

भारत का संविधान बहुत सी जातियों एवं जनजातियों के समूह को मान्यता प्रदान करता है। इन जातियों एवं जनजातियों को अनुसूचित जातियां तथा अनुसूचित जन जातियों कहते हैं। ये भारत की जनसंख्या के प्रमुख घटक हैं। भारत की जनगणना 1991 के अनुसार अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जन जातियां भारत की कुल जनसंख्या में क्रमशः 16.48 प्रतिशत तथा 8.08 प्रतिशत हैं। पूरे देश में इनका वितरण बड़ा ही असमान है।

(क) अनुसूचित जातियां

संख्या के अनुसार इनका सबसे अधिक संकेन्द्रण उत्तर प्रदेश में हैं तथा इसके बाद पश्चिम बंगाल तथा बिहार में। किसी राज्य की कुल जनसंख्या में अनुपात के अनुसार, ये सबसे अधिक संख्या में पंजाब में हैं जहाँ पर इनका प्रतिशत कुल जनसंख्या में 28 प्रतिशत है। अनुसूचित जातियाँ अधिकतर भूमिहीन खेतिहर मजदूर, थोड़ी भूमि वाले कृषि उत्पादक तथा छोटी-छोटी वस्तुओं के उत्पादक अथवा कारीगर हैं। कृषिगत कार्यकलापों से सम्बन्ध होने के कारण, इनका सबसे अधिक संकेन्द्रण देश के जलोढ़ तथा तटीय मैदानों में पाया जाता है। अतः इनका प्रमुख संकेन्द्रण पंजाब, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल तथा बिहार में पाया जाता है। दूसरी ओर मध्य तथा उत्तर-पूर्व भारत के पहाड़ी तथा वनीय पट्टियों में तथा जनजातीय पेटी में बहुत कम अनुसूचित जाति की जनसंख्या है।

जिला स्तर के प्रारूपों का विश्लेषण करने पर निम्नलिखित तीन संस्तर दिखाई देते हैं।

(i) उच्च संकेन्द्रण के क्षेत्र

अनुसूचित जातियों के संकेन्द्रण के मुख्यतः दो प्रमुख क्षेत्र हैं। ये हैं - सिंधु-गंगा मैदान तथा पूर्वी तटीय मैदान इन दोनों ही मैदानों में उपजाऊ मृदा, पर्याप्त जल आपूर्ति तथा

बहुत सी फसलों के उत्पादन के लिए उपयुक्त जलवायु है। इन सुविधाओं के कारण यहाँ गहन कृषि का विकास हुआ, जिससे खेतिहर मजदूरों का जीवन यापन होता है।

(ii) मध्यम संकेन्द्रण के क्षेत्र

ऊपर चर्चित उच्च संकेन्द्रण के साथ वाले जिलों में अनुसूचित जातियों का मध्यम संकेन्द्रण है।

(iii) निम्न संकेन्द्रण के क्षेत्र

अनुसूचित जातियों का निम्न संकेन्द्रण मध्य विंध्याचल छोटा नागपुर क्षेत्र, राजस्थान का पश्चिमी शुष्क क्षेत्र, उत्तर प्रदेश का पहाड़ी क्षेत्र, हिमाचल प्रदेश, उत्तर-पूर्वी भारत, तथा कर्नाटक एवं महाराष्ट्र के तटवर्ती भागों में मिलता है।

(ख) अनुसूचित जन जातियाँ

जनजाति लोगों की बहुत सी विशिष्ट विशेषताएं हैं, जिन्होंने उन्हें शेष जनसंख्या से अलग रखा है। वे प्राय: वनाच्छादित तथा पर्वतीय भागों में एकाकी भागों में निवास करते हैं तथा अत्यन्त पुरानी धार्मिक धारणाओं में विश्वास रखते हैं। इनमें से अधिकतर की कोई लिपि नहीं है। इनमें से अधिकांश अलौकिक शक्तियों तथा अलौकिक धारणाओं में आस्था रखते हैं।

अनुसूचित जनजातियों का वितरण सारे देश में एक समान नहीं हैं। देश के तीन प्रमुख क्षेत्रों में ही इनकी अधिकांश जनसंख्या निवास करती है। ये क्षेत्र हैं - (1) मध्य भारत की पेटी जिसमें राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश, उड़ीसा तथा पश्चिमी बंगाल, के कुछ भाग सम्मलित हैं। (2) उत्तरी-पूर्वी क्षेत्र जिसमें असम मेघालय, मणिपुर, मिजोरम, नागालैंड, त्रिपुरा एवं अरूणाचल प्रदेश के पर्वतीय भाग आते हैं। (3) दक्षिणी क्षेत्र जिसमें तमिलनाडु तथा आंध्रप्रदेश के पर्वतीय भूभाग एवं अण्डमान और नीकोबार द्वीप समूह को सम्मलित किया जाता है। जनजातीय जनसंख्या का वितरण मानचित्र में दिखाया गया है। (देखो चित्र 27.6)

उपरोक्त विवेचन तथा मानचित्र से यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि भारत में जनजाति जनसंख्या देश के कुछ चुने हुए क्षेत्रों में ही केन्द्रित है। मानचित्र के गहन अध्ययन से यह और भी अधिक स्पष्ट होता है कि जनजातीय लोग अधिकतर जंगलों, पर्वतीय भागों तथा कम कृषि उत्पादकता वाले क्षेत्रों में निवास करते हैं। इन क्षेत्रों में से अधिकांश प्राकृतिक कठिनाइयों जैसे ऊबड़-खाबड़ धरातल और जलवायुविक कठिनाइयों से पीड़ित हैं तथा इन सभी क्षेत्रों में आर्थिक विकास का स्तर अत्यन्त निम्न है। यहां पर प्राकृतिक

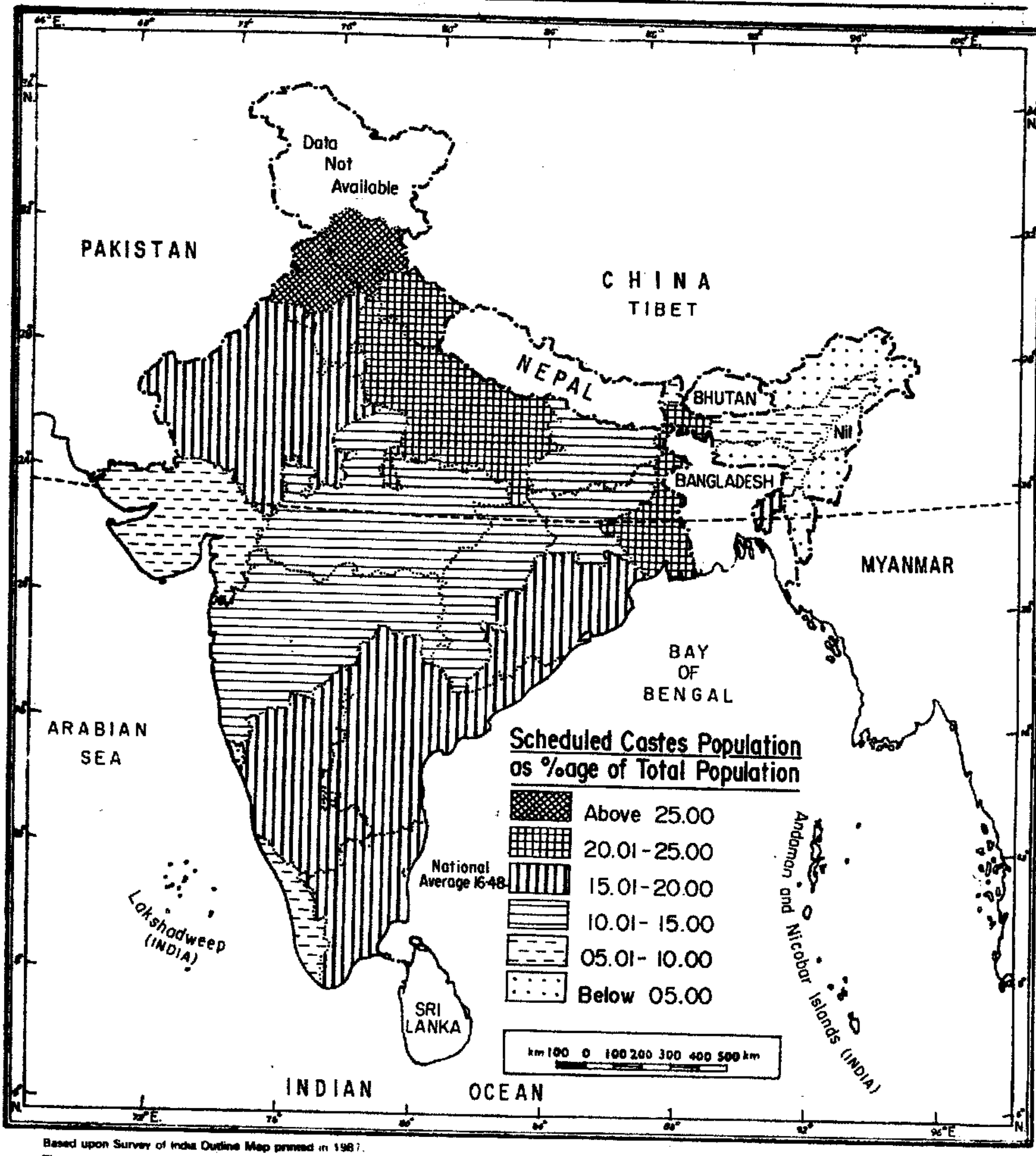

Based upon Survey of India Outline Map printed in 1987.
The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical miles measured from the appropriate base line.
The boundary of Meghalaya shown on this map is as interpreted from the North-Eastern Areas (Reorganisation) Act, 1971, but has yet to be verified.
Responsibility for correctness of internal details shown on the map rests with the publisher.

© Government of India copyright, 1987.

चित्र 27.5 भारत में अनुसूचित जातियों का वितरण

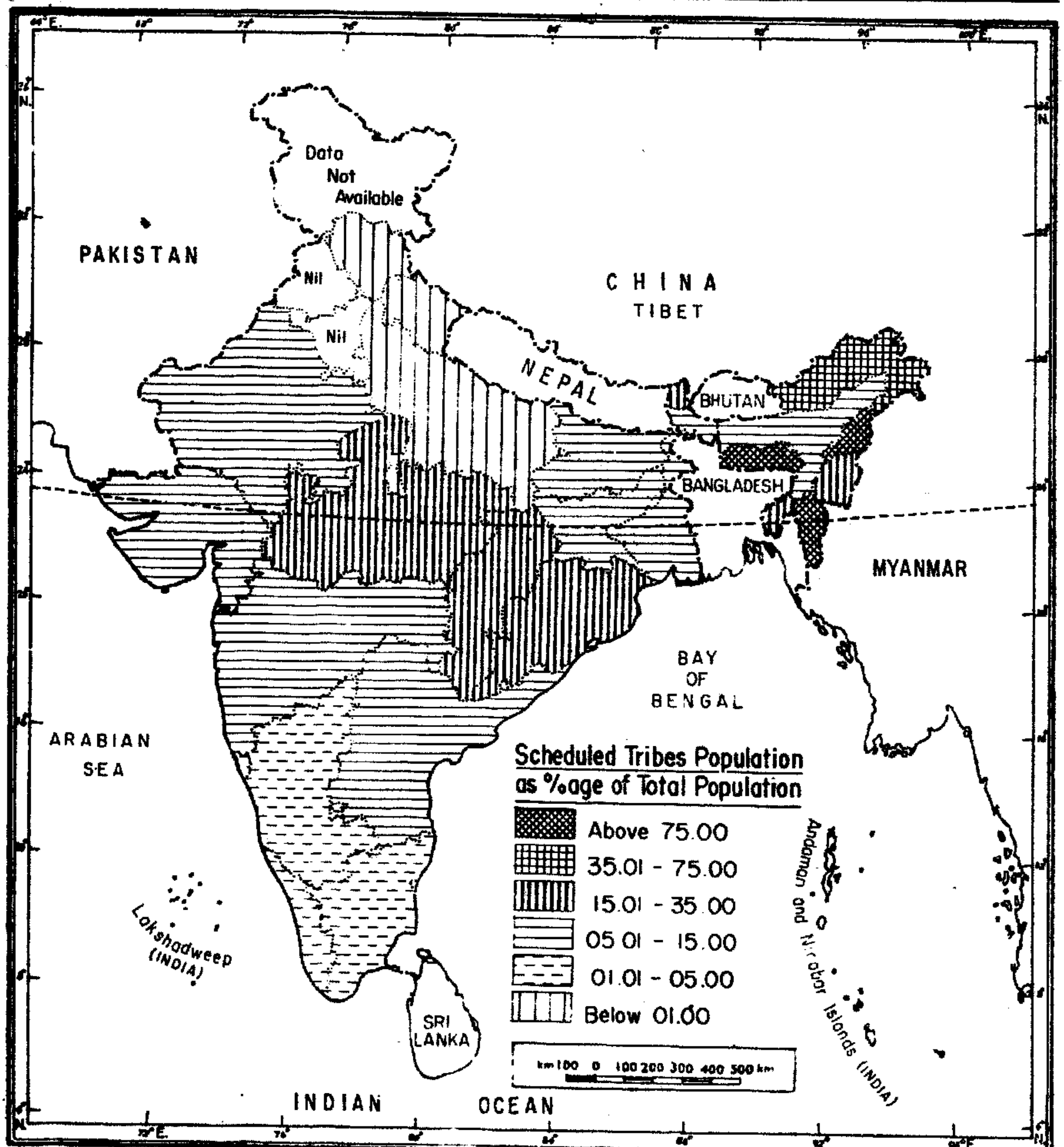

Based upon Survey of India Outline Map printed in 1987.
The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical miles measured from the appropriate base line.
The boundary of Meghalaya shown on this map is as interpreted from the North-Eastern Areas (Reorganisation) Act. 1971, but has yet to be verified.
Responsibility for correctness of internal details shown on the map rests with the publisher.

© Government of India copyright, 1987.

चित्र 27.6 भारत में अनुसूचित जनजातियों का वितरण

संसाधनों का विकास पर्याप्त नहीं हुआ है तथा यातायात के साधनों एवं संचार के साधनों का भी बहुत कम विकास हुआ है और यही सब कारक इन क्षेत्रों के निम्न आर्थिक स्तर के लिए उत्तरदायी हैं।

ऐसा समझा जाता है कि जन जातिय क्षेत्रों में निम्न आर्थिक विकास का कारण इन क्षेत्रों में जन जातिय लोगों का बसा होना है। पग्न्तु यह विचारधारा सत्य नही हैं। इन क्षेत्रों में आर्थिक विकास के कम होने के प्रमुख कारण सम्भाव्य साधनों का सीमित होना, परिवहन के साधनों का अभाव तथा प्राकृतिक वातावरण के तत्वों का निरन्तर बाधक होना है। इन क्षेत्रों में जीवन की ये सामान्य कठिनाइयां ही इस बात के लिए उत्तरदायी है कि ये क्षेत्र जनजातीय लोगों द्वारा बसे हुए हैं।

वास्तव में शुरू में जनजातिय लोग कठोर वातावरण की अवस्थाओं वाले इन क्षेत्रों में स्वेच्छा से आकार नहीं बसे हैं, बल्कि विस्तृत होती हुई आधुनिक सभ्यता ने उन्हें यहाँ धकेल दिया है। देश के प्रारंभिक अधिवासी, निरन्तर आक्रमणकारियों अथवा प्रवासियों के दबाब में तथा नवागंतुक का लड़ाई में मुकाबला न कर पाने के कारण एकान्त स्थानों में चले गए तथा ये लोग ही आज जन जातिय जनसंख्या का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।

जिला स्तर के प्रारूप

अनुसूचित जातियों की तरह जिला स्तर पर जनजातियों का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि इनके संकेन्द्रण के भी विभिन्न स्तर हैं। इन स्तरों को तीन वर्गों में बांटा जा सकता है। यह हैं – (i) उच्च संकेन्द्रण के क्षेत्र (ii) मध्यम संकेन्द्रण के क्षेत्र तथा (iii) निम्न संकेन्द्रण के क्षेत्र।

(i) उच्च संकेन्द्रण के क्षेत्र

पंद्रह जिले ऐसे हैं जिनमें अनुसूचित जनजातियां प्रभावी स्थिति में हैं। इन सभी जिलों में कुल जनसंख्या में जनजातिय जनसंख्या का प्रतिशत 50 प्रतिशत से अधिक है। इन पंद्रह जिलों में से 13 जिले उत्तर-पूर्व में, गुजरात में डांग जिला तथा मध्य प्रदेश में झाबुआ जिला है।

(ii) मध्यम संकेन्द्रण के क्षेत्र

इन क्षेत्रों में कुछ जनसंख्या में जनजातिया जनसंख्या का हिस्सा 50 से 80 प्रतिशत के बीच है। ये क्षेत्र हैं मध्य प्रदेश के धार, मांडला, सरगुजा तथा बस्तर जिले, उड़ीसा के सुन्दरगढ़, मयूरभंज तथा कोरापुट जिले, हिमाचल प्रदेश के लाहौल, स्पिति, तथा किन्नौर जिले, राजस्थान के डूंगरपुर तथा बांसवाड़ा जिले, बिहार का रांची तथा गुजरात का

वलसाड जिला। उत्तर-पूर्व के सैकड़ों जिले जैसे अरूणाचल प्रदेश के केभेंग, लोहित तथा तिरप जिले, असम एवं मणिपुर के मिकिर पहाड़ियां एवं उत्तरी कछार की पहाड़ियां भी इसी प्रदेश में सम्मलित हैं।

(iii) निम्न संकेन्द्रण के क्षेत्र

इस प्रदेश में जनजातिया जनसंख्या का अनुपात कुल जनसंख्या में 20 से 50 प्रतिशत के बीच हैं। इसमें बिहार, गुजरात, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा, राजस्थान, त्रिपुरा तथा पश्चिम बंगाल के सैकड़ों जिले सम्मलित है।

पाठगत प्रश्न 27.5

---

1. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से सबसे अधिक उपयुक्त शब्द द्वारा रिक्त स्थान भरिए :-

   (क) भारत में जनजातिय जनसंख्या के अधिक संकेन्द्रण का एक क्षेत्र ______________ में है। (पंजाब / हरियाण / बिहार)

   (ख) संथाल जनजातिय लोगों का अधिक संकेन्द्रण ______________ में है। (बिहार / तमिलनाडु / महाराष्ट्र)

   (ग) जरवा राज्य की कुल जनसंख्या के अनुपात के संदर्भ में अनुसूचित जातियों का सर्वाधिक संकेन्द्रण ______________ राज्य में है।

   (बिहार / उत्तर प्रदेश / पंजाब)

27.9 साक्षरता

साधारणतया साक्षरता का अर्थ होता है किसी व्यक्ति में पढ़ने, लिखने तथा साधारण गुणा भाग करने की क्षमता हो। साक्षरता की इस उदार परिभाषा के बावजूद देश में साक्षरता की दर अधिक ऊँची नहीं है। भारत की 1991 की जनेगणना के अनुसार भारत में साक्षरता की औसत दर 52.19 प्रतिशत है। इस साक्षरता प्रतिशत में 7 साल से कम उम्र के बच्चों की जनसंख्या शामिल नहीं हैं।

साक्षरता की दर में देश के एक भाग से दूसरे भाग में बहुत भिन्नता पाई जाती है। एक ओर तो केरल राज्य में यह दर 89.79 प्रतिशत है तो दूसरी ओर बिहार राज्य है जहाँ पर यह दर केवल 38.48 प्रतिशत है। केन्द्र शासित प्रदेशों में सबसे ऊँची साक्षरता दर लक्षद्वीप में है जहाँ पर यह 81.78 प्रतिशत है तथा सबसे कम दादरा तथा नगर हवेली में है जहाँ पर यह केवल 40.71 प्रतिशत है।

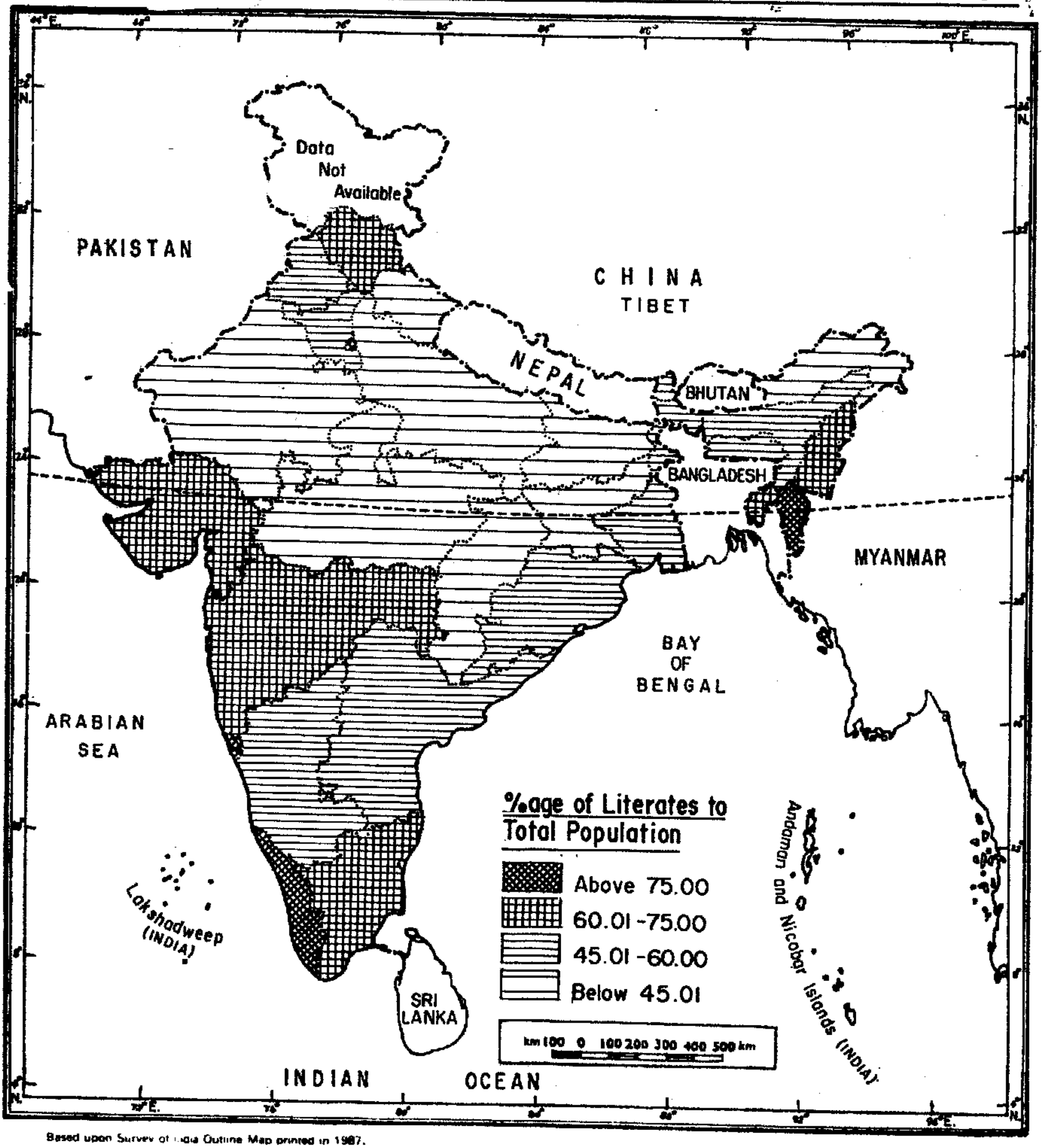

Based upon Survey of India Outline Map printed in 1987.
The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical miles measured from the appropriate base line.
The boundary of Meghalaya shown on this map is as interpreted from the North-Eastern Areas (Reorganisation) Act 1971 but has yet to be verified.
Responsibility for correctness of internal details shown on the map rests with the publisher.

© Government of India copyright

चित्र 27.7 भारत में साक्षरता

पुरुषों तथा महिलाओं में साक्षरता में भिन्नता है। भारत में पुरुषों में औसत साक्षरता दर 64.20 प्रतिशत जो महिलाओं की साक्षरता दर 39.19 प्रतिशत से अधिक है। केरल के दोनों पुरुषों एवं महिलाओं की साक्षरता दर अधिकतम होने की विशिष्टता प्राप्त है। केरल में इन दोनों की साक्षरता दर क्रमशः 93.62 तथा 86.13 प्रतिशत है। जबकि अरूणाचल प्रदेश में साक्षरता दर सबसे कम (51.45) है तथा राजस्थान में महिला साक्षरता दर सबसे कम (20.44) है। जनसंख्या के ग्रामीण तथा नगरीय संगठन के अनुसार ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या की साक्षरता दर में बहुत अधिक अन्तर है। नगरीय क्षेत्रों में साक्षरता दर 73.01 प्रतिशत है; जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यह केवल 44.54 प्रतिशत है।

यद्यपि देश में साक्षरता दर काफी कम है, परन्तु यह प्रत्येक उत्तरोत्तर जनगणना में बढ़ रही है। वर्ष 1911 में देश की कुल जनसंख्या का 6 प्रतिशत से भी कम भाग साक्षर था तथा 1951 तक यह प्रतिशत केवल 16.7 तक ही बढ़ पाया था। देश में साक्षरता की दर 1961 में 24 प्रतिशत के लगभग हो गयी थी जो 1991 में बढ़कर 52.19 प्रतिशत हो गई। इस सन्दर्भ में सबसे अधिक प्रगति महिला साक्षरता के क्षेत्र में हुई है। देश में महिलाओं में साक्षरता का अनुपात 1911 में केवल 1.1 प्रतिशत के लगभग था जो 1991 में बढ़कर 39.19 प्रतिशत हो गया। यह बहुत सीमा तक सरकार की सबको प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराने की नीति का परिणाम है। देश में ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा सुविधाओं के प्रसार ने साक्षरता विशेषकर महिलाओं में साक्षरता को बढ़ाने में विशेष योगदान दिया है।

यद्यपि प्रत्येक जनगणना दशक में साक्षरता दर बढ़ रही है, फिर भी निरक्षरों की संख्या बढ़ रही है। इस समस्या के समाधान के लिए सरकार ने अनेक योजनाओं जैसे राष्ट्रीय साक्षरता मिशन, जिला प्राथमिक शिक्षा योजना आदि शुरू की है।

जिला स्तर के प्रारूप

साक्षरता स्तरों के जिला स्तर पर प्रारूपों का विश्लेषण करने के बाद पता चलता है कि साक्षरता दर केरल के कोट्टायम जिले में 95.72 प्रतिशत से मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले में 19.01 प्रतिशत के बीच है। देश के उन 452 जिलों में जहाँ पर 1991 की जनगणना हुई थी, 21 जिलों में साक्षरता दर 80 प्रतिशत से अधिक है। इन 21 जिलों में केरल के सभी 14 जिले, तमिलनाडु के मद्रास तथा कन्याकुमारी जिले, महाराष्ट्र का बृहत बम्बई, लक्षद्वीप, गुजरात का गांधीनगर जिला, मिजोरम का ऐजवल जिला तथा पांडिचेरी का माहे जिला सम्मलित हैं। इसके विपरीत देश के 27 जिलों में साक्षरता दर 30 प्रतिशत से कम है। ये सात राज्यों में बिखरे हुए हैं। इन 27 जिलों में से 10 बिहार में, 7 उत्तर प्रदेश में, तीन-तीन जिले मध्य प्रदेश तथा राजस्थान में, दो अरूणाचल प्रदेश में तथा एक-एक जिला उड़ीसा तथा आंध्र प्रदेश में हैं।

* एक व्यक्ति जो किसी एक भाषा को पढ़, लिख और समझ सके उसे साक्षर कहते हैं।
* भारत में साक्षरता की दर 52.19 प्रतिशत है।
* अधिकतम साक्षरता दर (89.79 प्रतिशत) केरल में है, जबकि न्यूनतम साक्षरता दर (38.48 प्रतिशत) बिहार में है।
* साक्षरता दर महिलाओं की अपेक्षा पुरूषों में तथा ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा नगरीय क्षेत्रों में अधिक है।
* भारत में साक्षरता दर तेजी से बढ़ रही है।

आपने क्या सीखा

- किसी देश का विकास उसके मानव संसाधनों की गुणवत्ता एवं संख्या पर निर्भर करता है। मानव संसाधनों की गुणवत्ता उसकी जनसंख्या की संरचना पर निर्भर करती है। ये संरचना हैं - ग्रामीण - नगरीय, लिंग, आयु, भाषाई, धार्मिक, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा साक्षर-निरक्षर।

- भारत को गांवों के देश के रूप में जाना जाता है। आज तक 75 प्रतिशत से अधिक लोग गांवों में रहते हैं। परन्तु नगरीकरण की दर बढ़ रही है। नगरीय जनसंख्या की वृद्धि दर देश की औसत वृद्धि दर से अधिक है। इसका प्रमुख कारण लोगों का ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय क्षेत्रों की ओर प्रवास है। भारत में 23 महानगर हैं जिनमें से प्रत्येक की जनसंख्या 1,000,000 से अधिक है। दूसरी ओर हमारे यहां लिंग अनुपात प्रतिकूल है। प्रति एक हजार पुरूषों पर अधिकतम स्त्रियां केरल में (1038) हैं; जबकि सबसे कम (790) चण्डीगढ़ में हैं। लिंग अनुपात धीरे-धीरे जनगणना दशकों में कम हो रहा है। 1981 की जनगणना इसका अपवाद है।

- भारत में साक्षरता की दर (52.19 प्रतिशत) बहुत अधिक नहीं है। केरल में साक्षरता दर सबसे अधिक (89.79 प्रतिशत) है, जबकि बिहार में सबसे कम (38.48 प्रतिशत) है।

- भारत बहुत अधिक सामाजिक विविधताओं वाला देश है। यह ऐसे व्यक्तियों का निवास स्थान है जो विभिन्न जाति समूह, विभिन्न भाषा और धर्मों के लोग रहते हैं। जनजातिय लोग भारत की मूल नस्ल के व्यक्तियों से अधिक सम्बन्धित हैं तथा अन्य जिसमें अनुसूचित जातियां सम्मलित हैं, विभिन्न नस्ल समूहों के मिलने का परिणाम है। 1991 की जनगणना के अनुसार अनुसूचित जातियों तथा जनजातियों का अनुपात कुल जनसंख्या में क्रमशः 16.48 तथा 8.08 प्रतिशत है। अनुसूचित जनसंख्या अपने व्यवसाय के कारण अधिकतर मैदानी क्षेत्रों में संकेन्द्रित है; जबकि अनुसूचित जातियां सामान्यतया निर्जन, वनाच्छादित तथा पहाड़ी पट्टी में रहती हैं, वे लोग अलौकिक प्राकृतिक शक्तियों में विश्वास करते हैं।

भाषा और धर्म की दृष्टि से भारत एक अद्वितीय देश है। यहां पर विश्व के सभी प्रमुख धर्मों को मानने वाले लोग हैं। इस देश में 18 प्रमुख भाषाएं तथा सैकड़ों बोलियां बोली जाती हैं।

पाठांत प्रश्न

1. भारत की जनसंख्या की निम्नलिखित विशेषताओं पर संक्षेप में चर्चा कीजिए: आयु संरचना ग्रामीण-नगरीय अनुपात, तथा लिंग अनुपात
2. भारत में साक्षरता की स्थिति का वर्णन कीजिए।
3. लिंग अनुपात के घटने के लिए कौन से कारक उत्तरदायी हैं। संक्षेप में चर्चा कीजिए।
4. भारत में जनजातिय जनसंख्या के प्रादेशिक वितरण पर चर्चा कीजिए।
5. अधिकतर भारतीय भाषाएं किस भाषाई परिवार से संबंधित हैं? देश में विभिन्न भाषाई परिवारों के वितरण का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

अपने उत्तर जांचिए

पाठगत प्रश्न

27.1 (क) कम (ख) प्राथमिक, द्वितीयक तथा तृतीयक (ग) बढ़ (घ) 23

27.2 (क) (i) केरल (ii) अरुणाचल प्रदेश

(ख) 927

(ग) किसी क्षेत्र में प्रति हजार पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या

27.3 1 (क) संथाली (ख) आर्य (ग) उत्तर-पूर्व के जन जातिय क्षेत्र

27.4 1. मुम्बई और मुम्बई के निकट

2. तमिलनाडु, केरल, आन्ध्र प्रदेश तथा उत्तर-पूर्वी क्षेत्र

3. जम्मू तथा कश्मीर

4. महाराष्ट्र तथा अरुणाचल प्रदेश

27.5 (क) बिहार (ख) बिहार (ग) पंजाब

पाठान्त प्रश्न

1. अनुच्छेद 27.3, 27,4 तथा 27,5 देखिए।
2. अनुच्छेद 27.9 देखिए।
3. स्त्रियों में जीवन प्रत्याशा की कमी, बालिकाओं में शिशु मृत्यु दर की अधिकता तथा हमारे सामाजिक, धार्मिक विश्वास जिसमें लड़के को प्राथमिकता
4. अनुच्छेद 27.8 ख देखिए।
5. अनुच्छेद 27.6 देखिए।